परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्तो,

आपके हाथ मैं हूँ "चहकने की ललक"।

हाँ, यही है मेरा नाम मुझे लिखने वाले मेरे बाल लेखको ने दिया है। ये परिवर्तन के बच्चे है जो मेरे लिए लिखते हैं।

उनका यह मानना है कि जब वह मुझसे जुड़े, मेरे लिए लिखा तो उन्होंने खुद को उन्मुक्त महसूस किया। और वह बेहद खुश थे, उन दोस्तों का आभार।

आपकी ही,
चहकने की ललक

धान की रोपाई

अपनी बात

जब धान की रोपाई होने लगती हैं तो बड़ा मजा आता है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली छा जाती है। और रिमझिम रिमझिम पानी होता है। और मौसम इतना सोहाना लगता है कि पुछिये ही मत। जब धान की खेत में जाते हैं तो चारों तरफ धान ही धान नजर आता है। जब धान पकने लगते हैं तो किसान इसको काटने लगते हैं और उसे घर ही आठि है। तथा धान का पिटाई करते हैं और उसको कुटवाकर घर जाते हैं। उसके बाद बनाकर अपना पेट भरते हैं।

गोलू कुमार साह, कक्षा–7, भीखपुर

आप बीती

नन्हा खरगोश

मैंने एक छलांग मारते खरगोश को देखा, वह बड़े–बड़े घास में रहता था। वह इधर–उधर घुमता था, वह बहुत सुन्दर खरगोश था, वह सफेद रंग का था उसको मैंने पकड़ा, उसका बाल बड़ा था। कुछ समय बाद आंधी आई और बादल गरजने लगा और बारिश होने लगी, मैं छुपने के लिए जगह ढुंढने लगा, तब तक खरगोश मेरे हाथ से निकल गया। मैंने उसे ढूंढा वह नहीं मिला।

राहुल कुमार, कक्षा–7, संथू

आप बीती

मक्का की बुआई

एक टैक्टर वाला था वह बोलबम गया था उसका टैक्टर चलाने ण्ण्ण एक ड्राइवर था जो खेत को जोतकर अच्छी लाइन कर देता था और लोग मक्का रोप देते थे और वह उसको हेंगी से बराबर कर देते थे वह मेरे ख्याल में एक खेत को जोतकर चला गया और वह मेरे रहने के बाद भी हमारा खेत नहीं जाता और वह ट्रैक्टर लेकर चला गया मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं दुःखी दुःखी

घर पर आया बाद में वह ट्रैक्टर पाया फिर जोतने आया तो मैं बोला कि मेरा मक्का नहीं बोआएगा तो वह मुझसे माफी मांगा और मेरा खेत जोत दिया और मैं मक्का बोया और खुशी खुशी घर आया और शाम को घर पर दही, भात और मक्कापुरी बना और मस्ती से खाए।

दिपु कुमार साह, कक्षा–8, बंगरा उज्जैन

अपनी बात

रक्षा बंधन

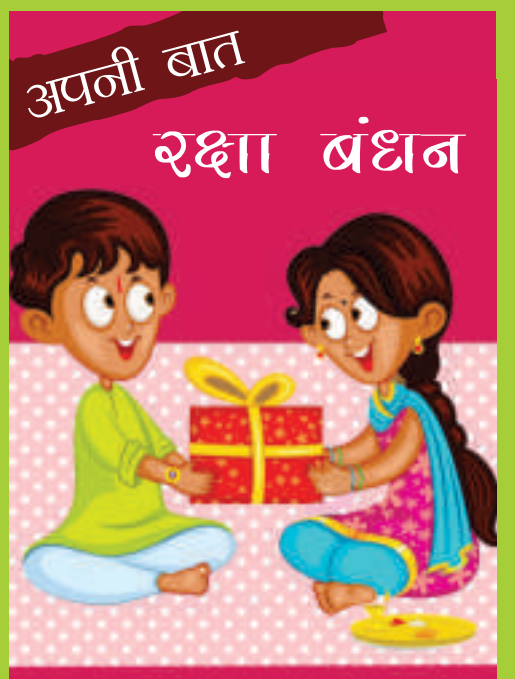

रक्षा बंधन में हमलोग अपने बहन से राखी बंधवाते हैं और जो हमलोगों के मन में आता है ओ हमलोग देते हैं रूपया, कपड़ा इत्यादि। और मिठाई भी बहन खिलाती है हमलोग मोटर कार पर बैठकर मामा के घर जाते है जो हमारी बहन लगती हैं वो मुझे राखी बांधती है हम उसको पैसा देते है। राखी बंधवाने से क्या फायदा होती है। राखी बांधती है वो भाई सही सलामत रहता है। और भाई बहन का प्यार बना रहता है।

रितेश कुमार, कक्षा–7, मियाँ भटकन

अपनी बात

रक्षा बंधन

रक्षा बंधन भाई–बहन का पर्व है, रक्षा बंधन के सुबह में उठते हैं, भगवान को नमस्कार करते हैं, और फिर माता–पिता

को प्रणाम करते हैं, उसके बाद दीदीयों को प्रणाम करते हैं। उस दिन भगवान के मंदिर में पुजा आरती करते हैं, और भगवान से विनती करते हैं कि भाई–बहन का प्यार हमेशा बना रहे और माता–पिता का आशिर्वाद मिलता रहे। एक थाल में बहन रक्षासुत्र और मिठाई आरती सजाकर भाई को राखी बाँधती है, हमारे गाँव में अष्टजाम भी होता है, शाम के समय मेंहदी चढ़ाई जाती है। भाई बहन को तोफा देते हैं।

प्रिंस कुमार चौरसिया,
कक्षा–12, बैकुण्ठपुर

अपनी बात

धान की खेती

धानों की खेती में हम सबसे पहले खेत को जोतते हैं। उसके पानी देते है। और फिर बीज डालते हैं। फिर बीज डालने के 15 दिन बाद हम उसको उखाड़ते जाते हैं तब तक 15 दिनों में बीज बड़े हो जाते हैं।
फिर हम उखाड़कर दुसरे खेतों में अपने हाथ से बोते हैं खेत को जोतते है पानी देते है और फिर उखाड़े गए बीज को बोते हैं सुरज के प्रकाश के कारण कुछ खेतों में धान सुखने लगता है तो हम उसमें पानी देते हैं। वे सुरक्षित हो जाते हैं। फिर वो बड़ा हो जाता है। तो उसको काटते हैं। धान काटते

हैं बोझा बनाकर घर लाते हैं। फिर उसको पिटकर धान निकालते हैं। अपना भोजन बना लेते हैं, बाकी भाग गाय को खाने में काम आ जाता है। इसी तरह होती है। धान की खेती।

करण कुमार, कक्षा–9, नरेन्द्रपुर

कहानी

पेड़ का आवाज

एक गाँव में एक अमीर रहता था उसका नाम संजय था उसी गाँव में एक श्याम नाम का लड़का रहता था। वह बहुत गरीब था, एक दिन श्याम संजय के घर भीख मांगने गया, संजय उसको भीख नहीं दिया, वह निराश होकर घर लौट गया, वह सोचने लगा कि संजय के पास इतना धन था फिर भी वह कुछ नहीं दिया। एक दिन श्याम जंगल में गया। वहाँ उसको एक पेड़ मिला

जो उससे कहने लगा कि तुम कौन जंगल में क्या करने आये हो श्याम सारी दुःख को सुनाया पेड़ बोला मैं तुम्हें धन देता हूँ, लेकिन इसमें से कुछ धन को तुम गरीबों में बांट देना, पेड़ तुरंत सोना हो गया और उसके पत्ते पैसे बन गये, श्याम उन पैसों को गरीबों को दान किया और सुखी सुखी रहने लगा।

मो. तनवीर, कक्षा–8, भँवराजपुर

आप बीती

15 अगस्त

15 अगस्त के दिन हमलोग स्कूल में झंडा फहराने जाते हैं झंडा फहराने से पहले पिटी करते हैं राष्ट्रीय गाना गाते हैं। झंडा फहर जाने के बाद संगीत,

नाटक करते है फिर प्राइज भी मिलता है। फिर हम सब क्लास में बैठते है और फिर हमलोग को खाने के लिए बूनिया मिलता है। खाने के बाद घर आते है घर जाने के बाद मम्मी–पापा पूछते है स्कूल में क्या–क्या हुआ थोड़ा बताओ फिर सारे बात मम्मी–पापा को बताते हैं मम्मी–पापा खुश हो जाते हैं और बोलते हैं मिठाई तो खिलाओ।

अनिकेत कुमार यादव,
कक्षा–7, मियाँ भटकन

कविता

वर्षा

छम–छम–छम–छम वर्षा आई
किसानों के मन को भाई
जब फसल सुख जाते हैं।
किसान दुखी हो जाते हैं।
भगवान से करते फरियाद
फसल उगा दे परवर दिगार

मर–मर के हम बोएंगे बीज
फिर भी न उगेगी कोई चीज
चारों तरफ देखेंगे सुखार
करेंगे हम वर्षा का इंतजार
कुछ कर दो हे भगवान।
दूर कर दो ये महामार

क्यों तड़पाते हो लोगों को
कर दो इनका फसल तैयार
फसल न होने पर
मर जायेंगे पुरा संसार
कुछ कर दो हम पर उपकार
फसल उगा दो पर्वत दिगार

रिशु सिंह, कक्षा–8, बड़हुलिया

अपनी बात

15 अगस्त

15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ था, इसके पहले हमारा देश गुलाम था, हमलोग अंग्रेजों के कब्जे में थे, उसके बाद हमारे देश में अनेको वीर जन्मे और अंग्रेजों को मार

भागाये। आज भी हम उन लोगों को याद करते हैं, और 15 अगस्त के दिन झंडा फहराते हैं, और उनको याद करते हैं।

मुस्कान खातुन, कक्षा–8, जामापुर

आप बीती

रक्षा बंधन

कल रक्षा बंधन है और मैंने अपने भाईयों को फोन किया था। मैंने कहाँ कि भईया कल आ जाना क्योंकि कल रक्षा बंधन है भईया बोला ठीक है और सुबह होने के बाद भइया आए और मैंने उनको राखी बांधा और भइया मुझे 100 रूपये दिया और वादा किये कि हर वक्त में तुम्हारी रक्षा करूंगा मैं खुश हो गई और मैं फिर रक्षा बंधन का इंतजार करने लगी।

निशा कुमारी,
कक्षा–6,
मियाँ भटकन

कविता

मेरा गाँव

मैं गाँव में रहता हूँ
दाल–भात खाता हूँ
स्कूल रोज नहीं जा पाता हूँ
क्योंकि परिवर्तन जाता हूँ
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
क्रिकेट खेलने जाऊँगा
छक्के–चौके लगा–लगा कर

कपिल देव बन जाऊँगा
माँ मुझे क्रिकेट खेलने जाने दो
विश्व कप लाऊँगा।

रवि कुमार, कक्षा–7, संथू

कविता

रक्षा बंधन

रक्षाबंधन का दिन आया,
सब मिलकर गाना गाये धुम मचाए।
बहनों से भाइयों को रक्षा मिल गया,
भाइयों से बहनों को अहार मिल गया।

रक्षा बंधन का दिन आता है,
खुब मजा आ जाता है।
बहने अपने हाथों से,
खुब मिठाई खिलाती है।

बहनों का रक्षा सूत्र सबके मन को भाता है,
बहनों का प्यार और भाई का दुलार
उस दिन मिल पाता है,

घर में मामा, भैया आते
खुब मिठाई लाते हैं,
रक्षा बंधवाते हैं,
खुब उपहार देते हैं।

प्रियांशु कुमार बर्नवाल,
कक्षा–8, बंगरा उज्जैन

अपनी बात

रक्षा बंधन

रक्षा बंधन एक हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है। उस दिन सभी बहने अपने भाई को राखी बांधती हैं और सभी बहने भगवान से यही प्रार्थना करती है, मेरे भाईयों को सभी झंझटो से बचाये। और उस दिन नये–नये कपड़े पहनते है। राखी को बहना बांधती है। हमलोग खुश होकर उन्हें पैसा देते हैं।

बिटू कुमार, कक्षा–8, भरौली

अपनी बात

सावन के महिना

सावन के महिने में बहुत सारे आदमी पुजा के लिए बोलबम जाते हैं वहाँ जाकर शंकर भगवान को जल चढ़ाते हैं, सावन के महिने में धान की रूपाई होती है, ज्यादा बारिश होती है। सभी लोग खेतों में काम करते हैं। हमलोगों को सावन का महिना बहुत अच्छा लगता है।

अरूण कुमार, कक्षा–5, भँवराजपुर

आप बीती

बारिश

जब बारिश होती है तो हमलोग बारिश में नहाते हैं। तो हमारी मम्मी हमलोगों को मारती है। इसलिए मारती है कि बारिश में नहाने से हम बीमार पड़ जाएंगे तो डाक्टर के पास जाना पड़ेगा। डाक्टर ने हमलोगों को दवाई देंगे और एक सुई भी लगाएंगे तथा हमसे पैसा भी लेते हैं।

संजीव कुमार यादव,
कक्षा–5, भँवराजपुर

चुटकुला

लड़का ने अपनी मां से बोला– मां मुझे दूध दो।
उसकी मां बोली– बेटा दूध फट गया है।
तो लड़का ने बोला मां सुई डोरा से सिल दो।

दुर्गेश कुमार, कक्षा–3, मियाँ भटकन

•••

टीचर बच्चों से– बताओं, आपरेशन से मरीज को बेहोश क्यों किया जाता है।
सोनु– मैडम ताकि मरीज आपरेशन करना न सीख ले, वरना बाद में डाक्टर को कौन पूछेगा।

प्रतिमा कुमारी, कक्षा–8, जामापुर

अपनी बात

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस के दिन हमलोग स्कूल में अपने सर को कलम देते हैं, और उस दिन स्कूल को सजाते है, केक मँगवाते हैं, और सर केक काटते है, उसके बाद स्कूल की छुट्टी हो जाती है।

रोशन कुमार, कक्षा–5, भँवराजपुर

पहेलियाँ

- देने से घटती नहीं,
  करिए जी भर दान
  छीनने से छिनती नहीं
  देते बढ़ता मान

- एक प्राण हैं काठी रंग का
  सिर पर है वह सुहाता
  तेज धूप वर्षा में खिलता
  हाथ में वह सरमाता

ज्योति कुमारी, वर्ग–8, रूईया

आने वाला थीम

गाँधी जयन्ति
दुर्गापूजा
दशहरा
छठ पूजा
दिपावली
मुहरम
राजेन्द्र प्रसाद जयन्ति
बाल दिवस
क्रिसमस डे

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित। सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स